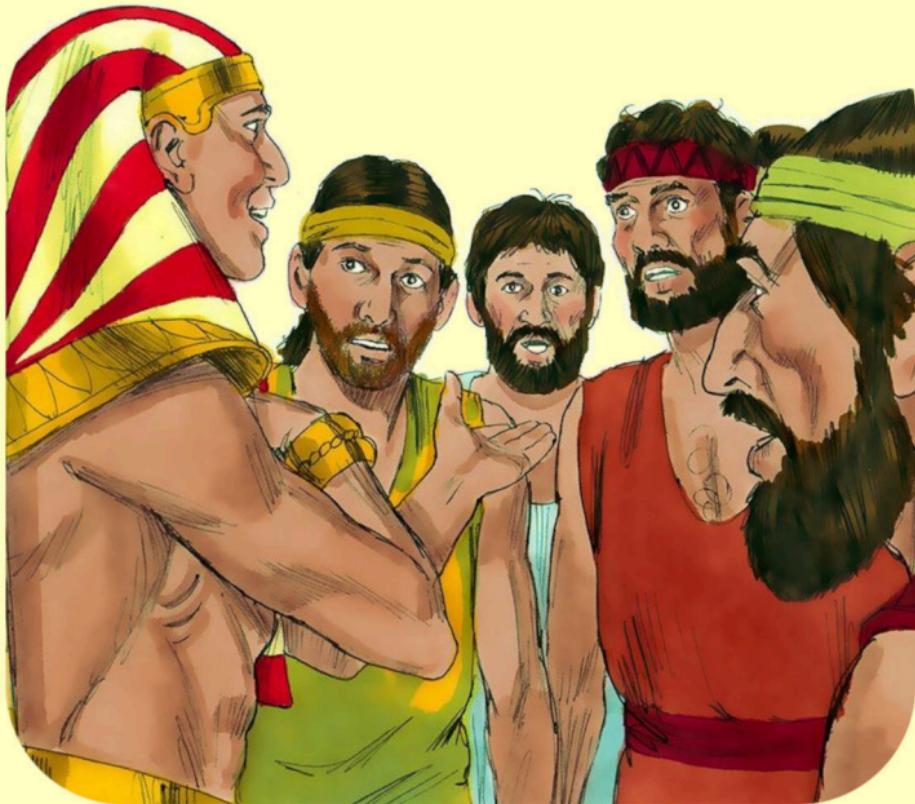


हज़रत यूसुफ

और उन के भाई



hazrat yūsuf aur un ke bhāī
Hazrat Yusuf and His Brothers

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: Jim Padgett (<https://sweetpublishing.com>)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

हज़रत इब्राहीम का एक बेटा था—इसहाक। इसहाक के दो बेटे थे। इनमें से एक याकूब था जिसके 12 बेटे पैदा हुए। इनमें से एक यूसुफ था। यूसुफ की दिलचस्प कहानी तौरात में लिखा है :

यूसुफ के खाब

याकूब मुल्के-कनान में रहता था जहाँ पहले उसका बाप भी परदेसी था। उस वक्त याकूब का बेटा यूसुफ 17 साल का था। वह अपने भाइयों के साथ भेड़-बकरियों की देख-भाल करता था। यूसुफ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तला दिया करता था।



याकूब यूसुफ को अपने तमाम बेटों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था। इसलिए याकूब ने उसके लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ को हमसे ज़्यादा प्यार

करता है तो वह उससे नफरत करने लगे और अदब से उससे बात नहीं करते थे।

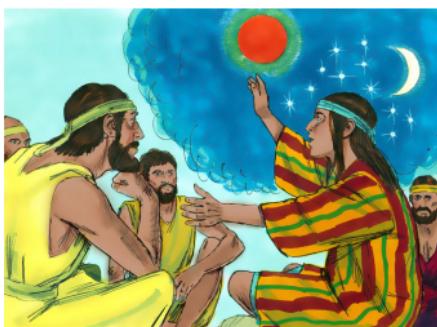


रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा होकर उसके सामने झुक गए।”

उसके भाइयों ने कहा, “अच्छा, तू बादशाह बनकर हम पर हुकूमत करेगा?” उसके खाबों और उसकी बातों के सबब से उनकी उससे नफरत मज़ीद बढ़ गई।

कुछ देर के बाद यूसुफ ने एक और खाब देखा। उसने अपने भाइयों से कहा, “मैंने एक और खाब देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।” उसने यह खाब अपने बाप को भी सुनाया तो उसने उसे डाँटा।

एक रात यूसुफ ने खाब देखा। जब उसने अपने भाइयों को खाब सुनाया तो वह उससे और भी नफरत करने लगे। उसने कहा, “सुनो, मैंने खाब देखा। हम सब खेत में पूले बाँध



उसने कहा, “यह कैसा खाब है जो तूने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आकर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?” नतीजे में उसके भाई उससे बहुत हसद करने लगे। लेकिन उसके बाप ने दिल में यह बात महफूज रखी।

यूसुफ को बेचा जाता है

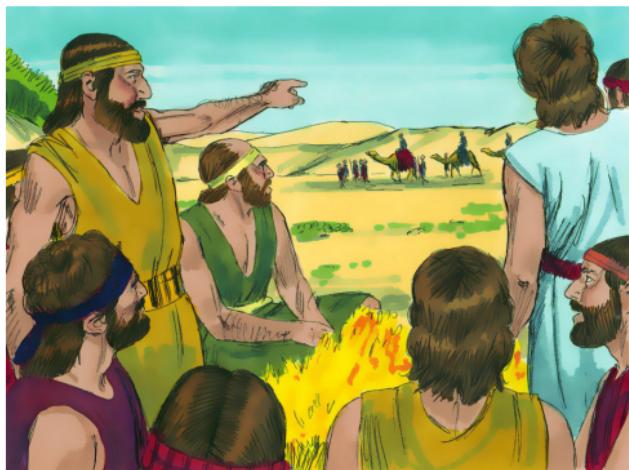
एक दिन जब यूसुफ के भाई अपने बाप के रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे तो याकूब ने यूसुफ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा रहे हैं। जाकर मालूम कर कि तेरे भाई और उनके साथ के रेवड़ खैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आकर मुझे बता देना।” यह सुनकर यूसुफ अपने भाईयों के पीछे चला गया।

जब यूसुफ अभी दूर से नज़र आया तो उसके भाईयों ने उसके पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। उन्होंने कहा, “देखो, खाब देखनेवाला आ रहा है।



आओ, हम उसे मार डालें और उसकी लाश किसी गढ़े में फेंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर पता चलेगा कि उसके खाबों की क्या हक्कीकत है।”

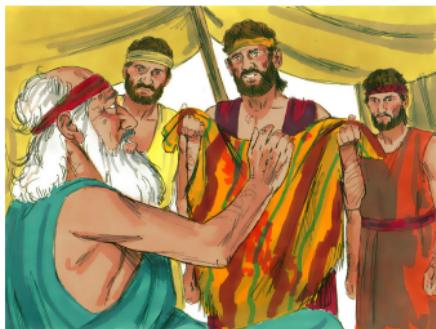
ज्योंही यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतारकर यूसुफ को गढ़े में फेंक दिया। गढ़ा खाली था, उसमें पानी नहीं था। फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए।



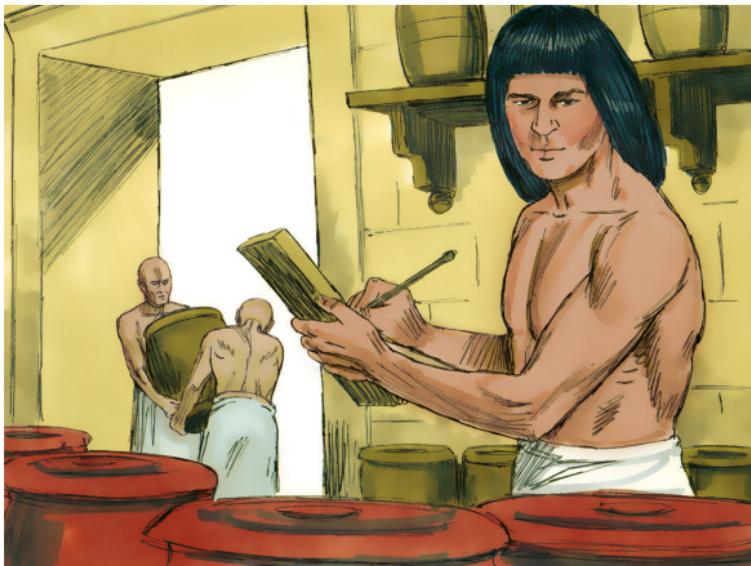
अचानक इसमाईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह मिसर जा रहे थे। चुनाँचे जब ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ को खींचकर गढ़े से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के एवज़ बेच डाला। इसमाईली उसे लेकर मिसर चले गए।

तब उन्होंने बकरा ज़बह करके यूसुफ का लिबास उसके खून में डुबोया, फिर रंगदार लिबास इस खबर के साथ अपने बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है। इसे ग़ौर से देखें। यह आपके बेटे का लिबास तो नहीं?”

याकूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। यक्कीनन यूसुफ को फाड़ दिया गया है।” याकूब ने ग़ाम के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा।



इसमाईलियों ने यूसुफ को मिसर ले जाकर बेच दिया था। मिसर के बादशाह के एक आला अफ़सर बनाम फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। रब यूसुफ के साथ था। जो भी काम वह करता उसमें कामयाब रहता। वह अपने मिसरी मालिक के घर में रहता था जिसने देखा कि रब यूसुफ के साथ है और उसे हर काम में कामयाबी देता है। चुनाँचे फ़ूतीफ़ार ने उसे अपने घराने के इंतज़ाम पर मुकर्रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उसके सुपुर्द कर दी। जिस वक्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इंतज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ के सुपुर्द की उस वक्त से रब ने फ़ूतीफ़ार को यूसुफ के सबब से बरकत दी। उसकी बरकत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी।



यूसुफ और फूतीफ़ार की बीवी

यूसुफ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था। कुछ देर के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उसने उससे कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!”

यूसुफ इनकार करके कहने लगा, “मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

मालिक की बीवी रोज़ बरोज़ यूसुफ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इनकार करता रहा।

एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। फूतीफ़ार की बीवी ने यूसुफ का लिबास पकड़कर कहा, “मेरे

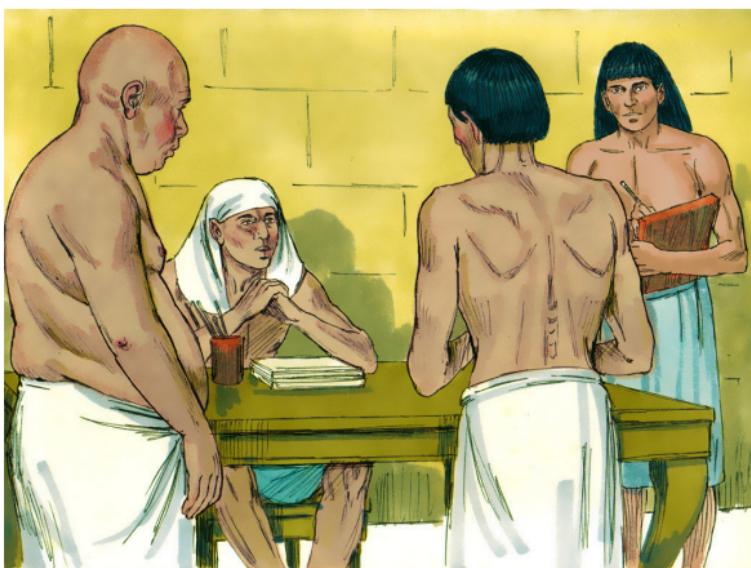


साथ हम बिस्तर हो!” यूसुफ भागकर बाहर चला गया लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। उसने मालिक के आने तक यूसुफ का लिबास अपने पास रखा। जब वह घर वापस आया तो उसने कहा, “यह इबरानी गुलाम जो आप ले आए हैं मेरी तज़्लील के लिए मेरे पास आया। लेकिन जब मैं मदद के लिए चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।”

यूसुफ कैदखाने में

यह सुनकर फूतीफार बड़े गुस्से में आ गया। उसने यूसुफ को गिरिफ्तार करके उस जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के कैदी रखे जाते थे। वहीं

वह रहा। लेकिन रब यूसुफ के साथ था। उसने उस पर मेहरबानी की और उसे कैदखाने के दारोगे की नज़र में मक्कबूल किया। यूसुफ यहाँ तक मक्कबूल हुआ कि दारोगे ने तमाम कैदियों को उसके सुपुर्द करके उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की ज़िम्मेदारी दी। दारोगे को किसी भी मामले की फ़िकर न रही, क्योंकि रब यूसुफ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बख्ती।



दो कैदियों के खाब

कुछ देर के बाद यों हुआ कि मिसर के बादशाह के सरदार साक्ति और बेकरी के इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया। फ़िरैन को दोनों

अफसरों पर गुस्सा आ गया। उसने उन्हें कैदखाने में डाल दिया जिसमें यूसुफ़ था। वहाँ वह काफ़ी देर तक रहे।

एक रात दोनों ने ख़ाब देखा। जब यूसुफ़ सुबह के वक्त उनके पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। उसने उनसे पूछा, “आज आप क्यों इतने परेशान हैं?”



उन्होंने जवाब दिया, “हम दोनों ने ख़ाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।”

यूसुफ़ ने कहा, “ख़ाबों की ताबीर तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़ाब तो सुनाएँ।”

जब सरदार साक्षी ने अपना ख़ाब सुनाया तो यूसुफ़ ने कहा, “तीन दिन के बाद फ़िरौन आपको बहाल कर लेगा। आपको पहली जिम्मेदारी वापस मिल जाएगी। लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें। मेरहबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। क्योंकि मुझे इबरानियों के मुल्क से इगावा करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझसे कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में फेंका जाता।”

तब शाही बेकरी के इंचार्ज ने अपना खाब सुनाया। लेकिन यूसुफ ने अफ़सोस से कहा, “तीन दिन के बाद ही फ़िरौन आपको कैदखाने से निकालकर दरख़त से लटका देगा।”

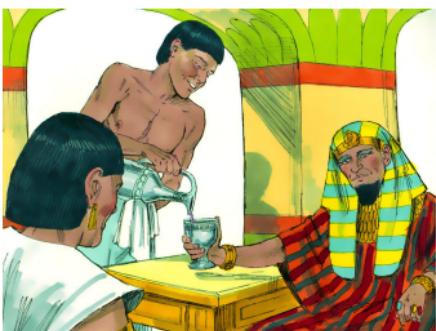


और ऐसा ही हुआ। तीन दिन के बाद बादशाह ने सरदार साक़ी को पहलेवाली ज़िम्मेदारी दी। लेकिन बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख़त से लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने कहा था। लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल न किया बल्कि उसे भूल ही गया।



बादशाह के खाब

दो साल गुज़र गए। एक रात बादशाह ने खाब देखा। वह दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। अचानक दरिया में से सात खूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। उनके बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं, और वह पहली सात खूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह जाग उठा। फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा उसने एक और खाब देखा। अनाज के एक पौधे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिकी हवा से झुलसी हुई थीं। अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और खूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फ़िरौन जाग उठा।



सुबह हुई तो वह परेशान था, इसलिए उसने मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उसने उन्हें अपने खाब सुनाए, लेकिन कोई भी उनकी ताबीर न कर सका।

फिर सरदार साक्षी को यूसुफ़ याद आया। उसने फ़िरौन को बताया कि जब मैं बेकरी के इंचार्ज के साथ जेल में था तो हम दोनों ने खाब देखे। वहाँ एक नौजवान बनाम यूसुफ़ था जिसने हमें उनका मतलब बता दिया। और जो कुछ भी उसने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ।

यह सुनकर फ़िरौन ने यूसुफ़ को बुलाया, और उसे जल्दी से कैदखाने से लाया गया। बादशाह ने कहा, “मैंने खाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उसकी ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू खाब को सुनकर उसका मतलब बता सकता है।”

यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे इख्तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैगाम देगा।”



तब फिरौन ने अपने खाब सुनाए।

यूसुफ ने बादशाह से कहा, “दोनों खाबों का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। सात साल आएँगे जिनके दौरान मिसर के पूरे मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। उसके बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएँगे कि पहले इतनी कसरत थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा। अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी को मुल्के-मिसर का इंतज़ाम सौंपें। इसके अलावा वह ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें। वह उन अच्छे सालों के दौरान खुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इस्खियार दें कि वह शहरों में गोदाम बनाकर अनाज को महफूज़ कर लें। यह खुराक काल के उन सात सालों के लिए मख्सूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों मुल्क तबाह नहीं होगा।”

यूसुफ को मिसर पर हाकिम मुक़र्रर किया जाता है

यह मनसूबा बादशाह और उसके अफ़सरान को अच्छा लगा। उसने उनसे कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ से ज़्यादा लायक़ आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह की रुह है।”

बादशाह ने यूसुफ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इसलिए कोई भी तुझसे ज़्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं है। मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ। मेरी तमाम रिआया तेरे ताबे



रहेगी। तेरा इख्तियार सिफ़ मेरे इख्तियार से कम होगा। अब मैं तुझे पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुकर्रर करता हूँ।”

सब कुछ वैसा हुआ जैसा यूसुफ़ ने फ़रमाया था। सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। यूसुफ़ ने तमाम खुराक जमा करके शहरों में महफूज़



कर ली। हर शहर में उसने ईर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफूज़ रखी।

फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिसर में वाफ़िर



खुराक पाई जाती थी। जब काल पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ ने अनाज के गोदाम खोलकर मिसरियों को अनाज बेच दिया। क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत खराब हो गए थे। तमाम ममालिक से भी लोग अनाज खरीदने के लिए यूसुफ के पास आए, क्योंकि पूरी दुनिया सख्त काल की गिरफ्त में थी।

यूसुफ के भाई मिसर में

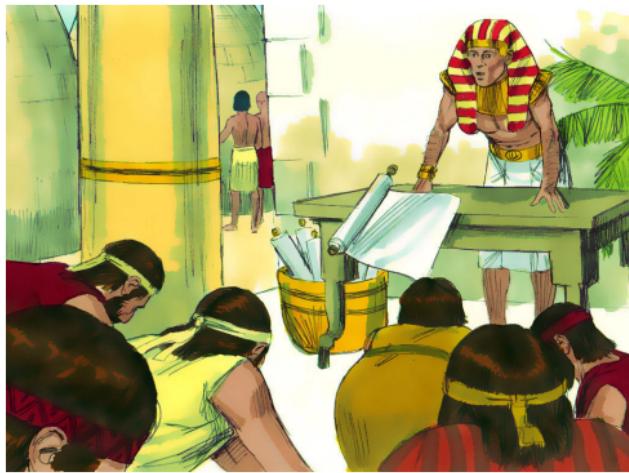
जब याकूब को मालूम हुआ कि मिसर में अनाज है तो उसने अपने बेटों से कहा, “तुम क्यों एक दूसरे का मुँह तकते हो? सुना है कि मिसर में अनाज है। वहाँ जाकर हमारे लिए कुछ खरीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।” तब यूसुफ के दस भाई अनाज खरीदने के लिए मिसर



गए। लेकिन याकूब ने यूसुफ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उसने कहा, “ऐसा न हो कि उसे जानी नुकसान पहुँचे।”

यूसुफ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर उसके सामने मुँह के बल झुक गए। गो यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। उसे वह खाब याद आए जो उसने उनके बारे में देखे थे। उसने कहा, “तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर गैरमहफूज़ है।”

उन्होंने कहा, “जनाब, हरगिज़ नहीं। आपके गुलाम गल्ला खरीदने आए हैं। आपके खादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे



हैं जो कनान में रहता है। सबसे छोटा भाई इस वक्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।”

लेकिन यूसुफ ने अपना इलज़ाम दोहराया, “ऐसा ही है जैसा मैंने कहा है कि तुम जासूस हो। मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फिरौन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सबसे छोटा भाई आए, वरना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे।”

यह कहकर यूसुफ ने उन्हें तीन दिन के लिए कैदखाने में डाल दिया। तीसरे दिन उसने उनसे कहा, “मैं अल्लाह का खौफ मानता हूँ, इसलिए तुमको एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। तुममें से एक यहाँ कैदखाने में रहे जबकि बाकी सब अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस जाएँ। लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास

ले आओ। सिर्फ इससे तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।”



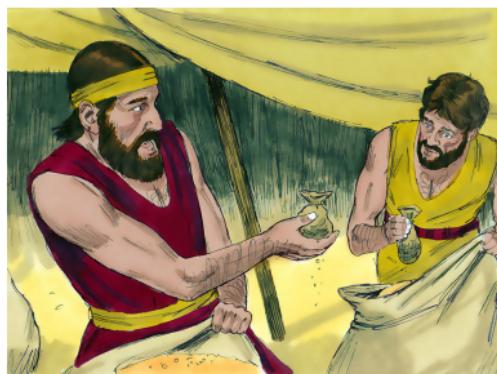
यूसुफ के भाई आपस में कहने लगे, “बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा है। जब वह इल्लिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हमने उसकी बड़ी मुसीबत

देखकर भी उसकी न सुनी। इसलिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।” उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ हमारी बातें समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरजिम की मारिफत उनसे बात करता था। यह बातें सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। फिर वह सँभलकर वापस आया। उसने शमाऊन को चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

यूसुफ के भाई कनान वापस जाते हैं

यूसुफ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे उसकी बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफर के लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। फिर यूसुफ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर रवाना हो गए। मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचकर उन्होंने उसे सब कुछ सुनाया जो उनके साथ हुआ था।

लेकिन जब उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देखकर वह खुद और उनका बाप डर गए।



उनके बाप ने उनसे कहा, “तुमने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा, शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी मुझसे छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे खिलाफ़ है।”

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफर

काल ने ज़ोर पकड़ा। जब मिसर से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो याकूब ने कहा, “अब वापस जाकर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला खरीद लाओ।”

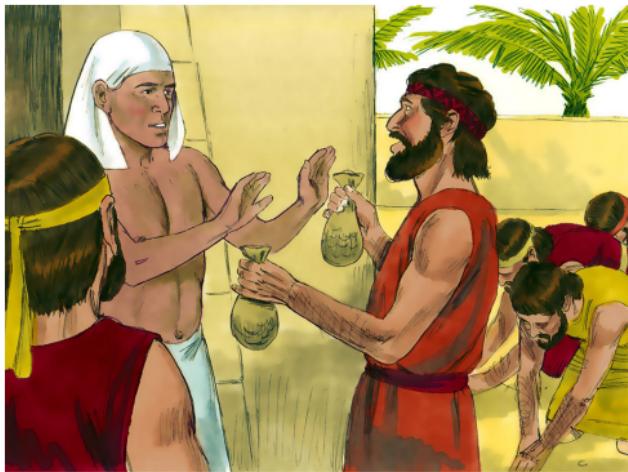
लेकिन यहूदाह ने कहा, “उस मर्द ने स़ख्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’ अगर आप हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जाकर आपके लिए ग़ल्ला खरीदेंगे वरना नहीं। क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उसके पास आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।”

तब उनके बाप ने कहा, “अगर और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोहफे के तौर पर लेकर उस आदमी को दे दो। अपने साथ दुगुनी रकम लेकर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से ग़लती हुई हो। अपने भाई को लेकर सीधे वापस पहुँचना। अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मुझे अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।”

जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, “इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को ज़बह करके खाना तैयार करो।”

जब उन्हें उसके घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डरकर सोचने लगे, “हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक हमला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें गुलाम बना लेंगे।”

इसलिए घर के दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से बात करके पैसे वापस देने की कोशिश की। लेकिन मुलाज़िम ने कहा, “फ़िकर न करें। आपके और आपके बाप के खुदा ने आपके लिए

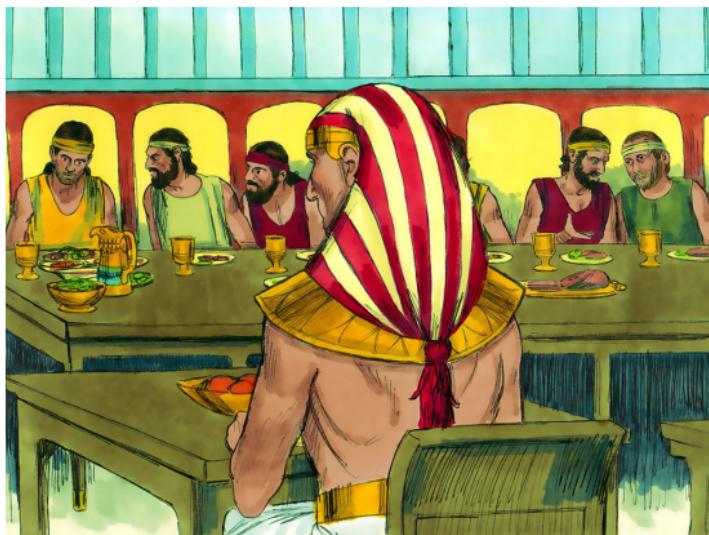


आपकी बोरियों में यह खजाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।”

मुलाज़िम शमाऊन को उनके पास बाहर ले आया। फिर उसने भाइयों को यूसुफ के घर में ले जाकर उन्हें पाँव धोने के लिए पानी और गधों को चारा दिया। उन्होंने अपने तोहफे तैयार रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, “यूसुफ दोपहर का खाना आपके साथ ही खाएगा।”

जब यूसुफ घर पहुँचा तो वह अपने तोहफे लेकर उसके सामने आए और मुँह के बल झुक गए। उसने उनसे ख़ेरियत दरियाफ्त की और फिर कहा, “तुमने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक हैं? क्या वह अब तक ज़िंदा हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “जी, आपके खादिम हमारे बाप अब तक ज़िंदा हैं।” वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।



जब यूसुफ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उसने कहा, “क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर हो।” यूसुफ अपने भाई को देखकर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए वह जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। फिर वह अपना मुँह धोकर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पाकर उसने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ। नौकरों ने उन्हें यूसुफ की मेज़ पर से खाना लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निसबत पाँच

गुना ज्यादा मिला। यों उन्होंने यूसुफ के साथ जी भरकर खाया और पिया।

गुमशुदा प्याला

यूसुफ ने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, “उन मर्दों की बोरियाँ खुराक से उतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले जा सकें। हर एक के पैसे उसकी अपनी बोरी के मुँह में रख देना। सबसे छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।” मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।

अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उनके गधों समेत रुखसत कर दिया गया। वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ ने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, “जल्दी करो। उन आदमियों का ताक्कुब करो। उनके पास पहुँचकर यह पूछना, ‘आपने हमारी भलाई के जवाब में गलत काम क्यों किया है? आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों चुराया है? उससे वह न सिर्फ पीते हैं बल्कि उसे गैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक निहायत संगीन जुर्म के मुरतकिब हुए हैं।’”

जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने उनसे यही बातें कीं। जवाब में उन्होंने कहा, “हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? कभी नहीं हो सकता कि आपके खादिम ऐसा करें। आप तो जानते हैं कि हम मुल्के-कनान से वह पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो

फिर हम क्यों आपके मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? अगर वह आपके खादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आपके गुलाम बनें।”



मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ वही मेरा गुलाम बनेगा जिसने प्याला चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।” उन्होंने जल्दी से अपनी बोरियों उतारकर ज़मीन

पर रख दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके आखिरकार सबसे छोटे भाई तक पहुँच गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। भाइयों ने यह देखकर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।

जब यहूदाह और उसके भाई यूसुफ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उसके सामने मुँह के बल गिर गए। यूसुफ ने कहा, “यह तुमने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी गैब का इल्म रखता है?”



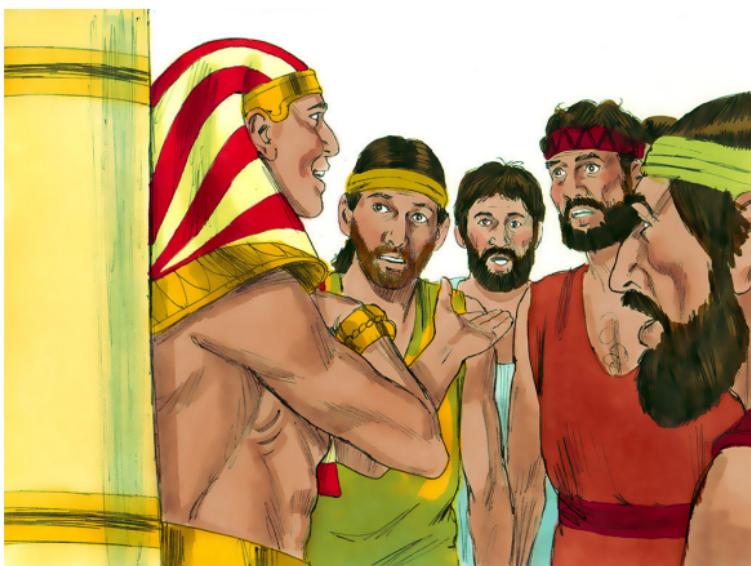
यहूदाह ने कहा, “जनाबे-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ़ा में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें कुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आपके गुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिसके पास से प्याला मिल गया।”

यूसुफ़ ने कहा, “अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा गुलाम होगा जिसके पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आकर कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे को एक बात करने की इजाज़त दें। अगर मैं अपने बाप

के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उनकी ज़िंदगी इस क़दर लड़के की ज़िंदगी पर मुनहसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे। न सिफ़ यह बल्कि मैंने बाप से कहा, ‘मैं खुद इसका ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा।’ अब अपने खादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रहकर इस लड़के की जगह गुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए।



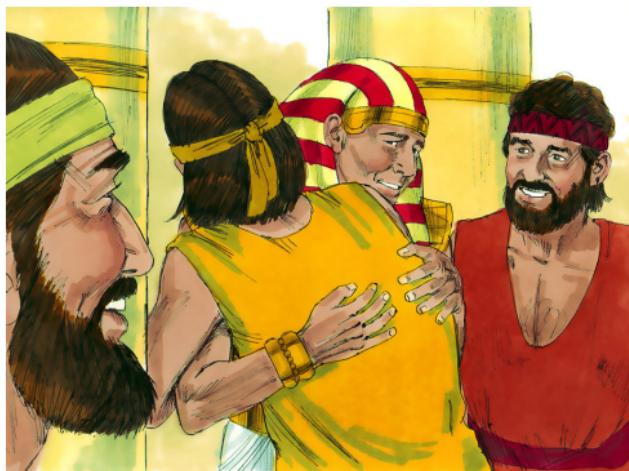
यूसुफ अपने आपको ज़ाहिर करता है

यह सुनकर यूसुफ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उसने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिसरियों ने उसकी आवाज़ सुनी और फ़िरैन के घराने को पता चल गया। यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िंदा है?”

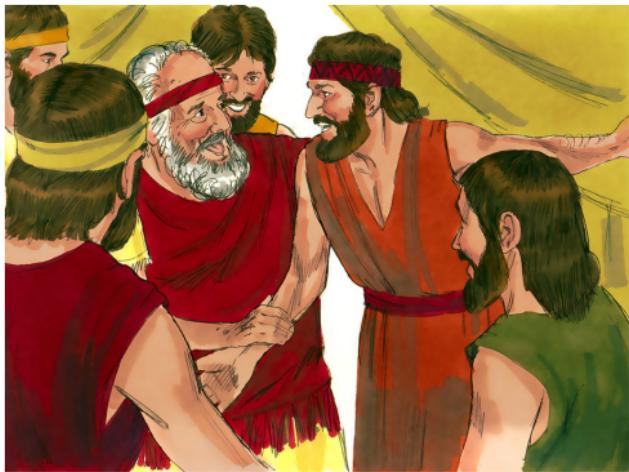
लेकिन उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।

फिर यूसुफ ने कहा, “मेरे क़रीब आओ।” वह क़रीब आए तो उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ जिसे तुमने बेचकर मिसर भिजवाया। अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आपको इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने खुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। यह काल का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी। अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा महफूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी मख्लसी की मारिफ़त छूट जाए। चुनाँचे तुमने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उसने मुझे फ़िरैन का बाप, उसके पूरे घराने का मालिक और मिसर का हाकिम बना दिया है। अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो,

‘आपका बेटा यूसुफ आपको इत्तला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। आप जुशन के इलाके में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे करीब होंगे, आप, आपकी आल-आलाद, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और जो कुछ भी आपका है। वहाँ मैं आपकी ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को अभी पाँच साल और लगेंगे। वरना आप, आपके घरवाले और जो भी आपके हैं बदहाल हो जाएँगे।’ ।”



यह कहकर वह अपने भाई बिनयमीन को गले लगाकर रो पड़ा। बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोने लगा। फिर यूसुफ ने रोते हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इसके बाद उसके भाई उसके साथ बातें करने लगे।



तब वह मिसर से रवाना होकर मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचे। उन्होंने उससे कहा, “यूसुफ ज़िंदा है! वह पूरे मिसर का हाकिम है।” लेकिन याकूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि उसे यक़ीन न आया। ताहम उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो यूसुफ़ ने उनसे कहा था, और उसने खुद वह गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ़ ने उसे मिसर ले जाने के लिए भिजवा दी थीं। फिर याकूब की जान में जान आ गई, और उसने कहा, “मेरा बेटा यूसुफ़ ज़िंदा है! यही काफ़ी है। मरने से पहले मैं जाकर उससे मिलूँगा।”

याकूब मिसर जाता है

याकूब सब कुछ लेकर रवाना हुआ। मिसर पहुँचकर याकूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के पास भेजा ताकि वह जुशन में उनसे मिले।



जब वह वहाँ पहुँचे तो यूसुफ अपने रथ पर सवार होकर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देखकर वह उसके गले लगकर काफ़ी देर रोता रहा। याकूब ने यूसुफ से कहा, “अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने खुद देखा है कि तू ज़िंदा है।”

बादशाह ने यूसुफ से कहा,
“तेरा बाप और भाई तेरे पास आ गए हैं। मुल्के-मिसर तेरे सामने खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन में रहें। और अगर उनमें



से कुछ हैं जो खास क्लाबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की निगहदाशत पर रख।”



फिर यूसुफ ने अपने बाप और भाइयों को मिसर में आबाद किया। उसने उन्हें रामसीस के इलाके में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया था। यूसुफ अपने बाप के पूरे घराने को खुराक मुहैया करता रहा। हर खानदान को उसके बच्चों की तादाद के मुताबिक़ खुराक मिलती रही।

याकूब का इंतकाल

फिर याकूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, “अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के सात दफ्नाना।” इन हिदायात के बाद याकूब ने अपने पाँव बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़कर अपने बापदादा से जा मिला।

याकूब को दफ्न किया जाता है

चुनाँचे यूसुफ अपने बाप को दफ्नाने के लिए कनान रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुजुर्ग और पूरे मिसर के बुजुर्ग उसके साथ थे। यूसुफ के घराने के अफ़राद, उसके भाई और उसके बाप के घराने के लोग भी साथ गए। यों याकूब के बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया। इसके बाद यूसुफ, उसके भाई और बाक़ी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिसर को लौट आए।

यूसुफ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

तब यूसुफ के भाई डर गए। उन्होंने कहा, “ख़तरा है कि अब यूसुफ हमारा ताक़कुब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हमने उसके साथ किया था। फिर क्या होगा?” यह सोचकर उन्होंने यूसुफ को ख़बर भेजी, “आपके बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी कि यूसुफ को बताना, ‘अपने भाइयों के उस ग़लत काम को माफ़ कर देना जो उन्होंने

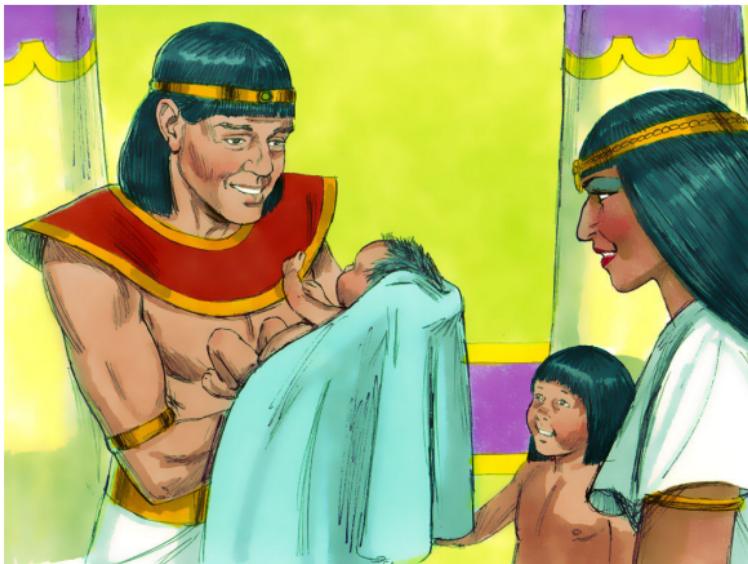
तुम्हारे साथ किया।’ अब हमें जो आपके बाप के खुदा के पैरोकार हैं माफ़ कर दें।”



यह खबर सुनकर यूसुफ रो पड़ा। फिर उसके भाई खुद आए और उसके सामने गिर गए। उन्होंने कहा, “हम आपके खादिम हैं।”

लेकिन यूसुफ ने कहा, “मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक्कसद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को खुराक मुहैया करता रहूँगा।”

यों यूसुफ ने उन्हें तसल्ली दी और उनसे नरमी से बात की।



मिसर में रहते हुए यूसुफ और उसके भाइयों के बहुत बच्चे पैदा हुए। होते होते उनकी औलाद फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क उनसे भर गया। अल्लाह तआला ने इब्राहीम से अपना वादा पूरा किया था कि मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा।

सवाल

- जब यूसुफ के भाई मिसर आए तो क्या यूसुफ ने उनसे बदला लिया?
 - नहीं।
- क्यों नहीं?
 - गो उन्होंने उसे बहुत दुख पहुँचाया था लेकिन यूसुफ को यह तजरिबा हुआ था कि

खुदा मेरे बारे में नेक इरादा रखता है।

गो दूसरे मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा रखें, लेकिन अल्लाह इससे भलाई पैदा करता है।

- इस तजरिबे ने यूसुफ को खुदा के बारे में क्या सिखाया?
 - इस तजरिबे ने उसे सिखाया कि तू अल्लाह पर पूरा भरोसा रख सकता है, चाहे वक्त अच्छा हो या बुरा। और चूँकि खुदा उसके बारे में अच्छा इरादा रखता था इसलिए यूसुफ अपने भाइयों को माफ करके कह सकता था कि

तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक्सद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं।

- क्या अल्लाह हमारे बारे में नेक या बुरा इरादा रखता है?

► अल्लाह हमारे बारे में भी नेक इरादा रखता है। वह हमें अबदी ज़िंदगी और अपने साथ रिफ़ाक़त बख्शना चाहता है। क़दीम ज़माने के नबी भी जानते थे कि अल्लाह हमारे बारे में अच्छा इरादा रखता है, गो कभी-कभार हमारी ज़िंदगी मुश्किल होती है। ऐन उस वक्त जब हमें दिक्कत और तकलीफ़ महसूस होती है अल्लाह हमें तसल्ली देता है। वह हमें तक़वियत देकर हमारी मदद करता है।

यों यसायाह नबी फ़रमाता है,

रब्बुल-अफ़वाज [...] ज़बरदस्त मशवरों और कामिल हिक्मत का मंबा है।

(यसायाह 28:29)

बाद में पौलुस रसूल फ्रमाते हैं,

हम जानते हैं कि जो अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं

उनके लिए सब कुछ मिलकर भलाई का बाइस बनता है,

उनके लिए जो उसके इरादे के मुताबिक बुलाए गए हैं। (रोमियों 8:28)

आइए हम रोज़ बरोज़ अपने आपको इस अज़ीम खुदा के सुपुर्द करें।

जो तौरेत में तफसील से यूसुफ़ और उसके भाइयों के बारे में पढ़ना चाहे वह पैदाइश 37 और 39 – 50 में पढ़े।